विषय :- शिक्षा की नई चुनौतियाँ

नई शिक्षा नीति वरदान या अभिशाप?

विद्या एक धन है, जिसे ईश्वर ने मानव को उपहारस्वरूप दिया है। हम मानव एक सामाजिक प्राणी हैं और इस समाज में ही हम अपनी जीवन लीला समाप्त करते हैं। तो मनुष्य और समाज को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए विद्या का इस्तेमाल होना चाहिए।

आज के जमाने में एक देश का मानदण्ड उसके शिक्षा नीति से देखा जाता है।

भारत देश पुरातन काल में विश्वगुरु के नाम से जाना जाता था। नालंदा, तक्षशिला जैसे बहुत अच्छे विद्यापीठ भी थे। पर जब ब्रिटीश लोगों ने भारत पर कब्जा किये तो यह सब विद्याकेन्द्र क्षीण होने लगे। उन्होंने अपने सम्प्रदाय और नीति को हमारे संस्कार में मिलाया और उनके मत के एक शिक्षा नीति को प्रारंभ किया और उसे "इंडियन इज्युकेशन सिस्टम" भी नाम-

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

करण किया।

* गुण:- आधुनिक शिक्षा से हमारे समाज में गुण और दोष दोनों हैं। अध्यापक और छात्र में भिन्नता का भाव होना, नये तरीके से पाठ-यक्रमों को सिखाना, सभी इसमें शामिल हैं। प्रधान गुण तो यह है कि बच्चों की मानसिक विकास में यह फायदा कर रहा है और बहुत से विद्यार्थियों के जीवन को भी एकदम बदल दिया है। जब वैद्युतिक यंत्रों ने तो शिक्षा प्रणाली में क्रांती ही कर दिया है। नव उपकरण और साधन विद्या आर्जनि प्रक्रिया को और आसान बना दिया है। शिक्षा सम्प्रदाय का गुण तो अनगिनत है। और विज्ञान के तेजी बढ़ाव शिक्षा सम्प्रदाय का भी फला कर रहा है।

यह निर्विवाद रूप से मान्य है कि शिक्षा प्रणाली में अनूठे गुण हैं। पर, जैसे फूल हो तो उसमें काँटे भी

हो सकते हैं, वैसे ही शिक्षा के क्षेत्र में भी गुण के साथ-साथ कुछ-कुछ अवगुण और चुनौतियाँ भी हैं। जिसका हम चाहें तो एक हद तक सुलझाने का उपाय मिल सकते हैं।

* अवगुण और चुनौतियाँ :- जिस विज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र को फलने-फूलने में कोई कसर नहीं छोडी है, उसी विज्ञान ने शिक्षा सम्प्रदाय में दोष भी बना रखे हैं।

शिक्षा सम्प्रदाय में एक प्रधान अवगुण है कि वहाँ नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती और बच्चों के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो रहा और चरित्र-निर्माण में भी कुछ असर नहीं हो रहा। सभी लोग एक न एक तरीके से फैशन के गुलाम हैं।

एक और प्रधान दोष शिक्षा क्षेत्र के परीक्षा प्रणाली का है। जहाँ बच्चों की काबिलियत और हुनर की परीक्षा होना है वहाँ सिर्फ

बच्चों के स्मरण शक्ति का ही जाँच हो रहा है। शिक्षा या विद्या देने का मतलब यही है की जो भी उसे आर्जित कर रहा है, उसे मानसिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से विकसित होने को प्राप्त करना और एक ~~चरित्र और जीवन~~ अच्छा चरित्रवाला आदमी बनना है। ~~अगर~~ समाज से होनेवाले शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का मनोबल भी इसी शिक्षा से प्राप्त होना है। मगर आज की शिक्षा सिर्फ "सिद्धांतों" के पीछे है, और उसे असर में अपने जीवन में कैसे प्रयोग करना है यह नही सिखाती।

सभी लोगों के आँखें सरकारी नौकरी पर ही है। शिक्षा प्राप्त करनेवाले भी रोज़गार कमाने में असमर्थ है। विद्यार्थियों को क्रियात्मक शिक्षा का अभाव बहुत बुरे तरीके से असर कर रहा है,

खेती जैसे काम भी आज अन्य होने का कारण भी यही है। यह सब चुनौतियाँ शिक्षा सम्प्रदाय के अंदर स्थित दोषों की ओर ही सूचना करती हैं।

इतने सारे सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय हमारे देश में हैं। किन्तु देखा जाय तो बहुत सारे "स्वकार्य स्थापन" शिक्षा के माध्यम से लाभ उठा रहे हैं। उसमें कुछ अच्छे भी होंगे पर ज्यादातर इसका नुकसान ही हमें देखने मिलता है। बड़े-बड़े परीक्षाओं के लिए तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को एक इंस्टिट्यूट से दूसरे इन्स्टिट्यूट में लाने के लिए उनके माँ-बाप को खूब पैसा देते हैं ताकि उस इन्स्टिट्यूट का नाम बना रहे। ये शिक्षा को सिर्फ पैसा कमाने का मार्ग बना दिया है।

दुःख की बात है कि शिक्षा प्राप्त करने के सिलसिले में आत्महत्याएँ तक हो जाती

है। जब कोई परीक्षा में उतना अच्छा नम्बर नही आता तो मन अशांत हो जाता है और यह आखिर में आत्महत्या में जाकर रुकता है। ऐसे बहुत बेशुमार बच्चों ने जान इसी सिलसिले में खो दिया है। कुछ लोगों यह पता ही नही होता कि जो वे चाहते है उनको नही मिला, उससे भी ज्यादा अच्छा उनको मिलेगा अगर वह परिश्रम करें तो।

मानसिक उन्नति के साथ-साथ शारीरिक वृद्धि भी जरूरत है। आज के शिक्षा प्राप्त करने के भाग-दौड़ के बीच में 'स्वास्थ्य' का कोई ध्यान नही है। अध्यापक और विद्यार्थी में जो मित्रता होना है, उसमें भी आदर की कमी होती है। विज्ञान के इस युग में सभी इसे शिक्षा के लिए भी अब इस्तेमाल करते है, पर अधिकांश जनता इसका उपयोग गलत तरीके से करते है और नवमाध्यमों

के मुट्ठी में फँस जाते हैं। उनका मानसिक रूप से भी दयनीय दशा है। माँ-बाप के कहने को नहीं मानते, उनका आदर नहीं, यह सब हम रोज सुनते ही आ रहे हैं। नवमाध्यमों के अमितोपयोग के फलस्वरूप विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर भी असर पड़ रहा है जिससे वह सही तरीके से शिक्षा अर्जित नहीं कर सकता। उनमें बातें सीखने की सहन शीलता और कुछ नया सुनने की इच्छा कुछ नहीं होता, इसे डॉक्टर लोगों ने एक रोगावस्था कहा है। इन सभी दोष या चुनौतियों को हमें ही सुलझाकर एक अच्छे शिक्षा सम्प्रदाय को बनाना है।

सुधार के मार्ग :- हमें बिना खर्चे आसानी से इन समस्याओं का हल ढूँढना है। जैसे हमने देखा विज्ञान तो "अलादीन की चिराग" की भाँति हर समय हमारे हित के लिए सचेत है, हम मानव ही उसके

62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 948 Participant Code: 124

बुरे उपयोग से विनाश की ओर रास्ता को चुन लेते हैं। वैसे देखा जाए तो शिक्षा पद्धति में ज्यादा दोष तो नही हैं, पर हमारे परिस्थितियों के अनुसार हम उस शिक्षा को आगे नही ले जा रहे। अगर माँता-पिता को अध्यापकों द्वारा निर्देश मिल जाए कि बच्चों में अधिक प्रतीक्षा नही करना है और उन्हे समझ आ जाए तो वे अपने बच्चों को भी सही मार्गनिर्देश दे सकते हैं प्रारंभ से ही बच्चों को सत्यरत्नों से परिचित करवाने हैं और उनको अच्छी तरीके से सोचने को सिखाना हैं, तभी वे शिक्षा से आर्जित ज्ञान को अपने जीवन में प्रयोग कर पाएँगे। इन सभी बातों को समझने और उचित रीति से सोचने का मनोभाव को पहले विकसित करना हैं। अगर सही समय पर सही ज्ञान दिया जाए तो यह समस्याएँ ज्यादा किसी परिश्रम के बिना हम दूर कर सकते हैं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

अच्छे अध्यापकों का न होना, विद्यार्थियों के बुरे आर्थिक स्थिति, घर का प्रतिकूल वातावरण, जैसे चुनौतियाँ भी हमारे समक्ष हैं। इसे सुधारने के लिए हमें ही प्रयत्न करना पड़ेगा, और कुछ कार्यों में सरकार को एक दृढ़ फैसला भी लेना पड़ेगा। ~~आज~~ विद्या का वाणिज्यवत्करण को सिर्फ विद्या आर्जन करनेवाले ही रोक सकते हैं। शिक्षा वही है जो मानव को सही राह दिखाये, ~~अच्छा~~ सफल जीवन प्रदान करें, सकता है। हमें कुछ भी करते वक्त इसके बारे में सोचना है। अन्य हुए भारतीय सम्प्रदाय के थोड़े शिक्षण रीति ~~यों~~ को भी हम सही तरीके से प्रयोग करें तो हम चुनौतियाँ एवं बाधाओं को हल निकाल सकते हैं। इसके लिए सभी को एक साथ तैयार होना ही है। तभी इस शिक्षा का यथार्थ अमृत हमें प्राप्त होगा और व्यक्तिगत उन्नति, सामाजिक उन्नति और देश की उन्नति साध्य ~~है~~। होगा।